परमात्म प्यार बनाम देहधारियों का प्यार

देहधारियों के प्यार में स्वार्थ भरा होता है।
परमात्म प्यार नि:स्वार्थ प्यार होता है।
देहधारियों के प्यार में दु:ख, दर्द, पीड़ा समाई होती है।
परमात्म प्यार में सदैव सुख, शान्ति, खुशी, आनन्द समाया होता है।
देहधारियों का प्यार विकारी वासनाओं की दुर्गन्ध वाला होता है।
परमात्म प्यार निर्विकारी अतिन्द्रिय सुख की अनुभूति कराता है।
देहधारियों के प्यार में अनावश्यक इच्छाएं, कामनाएं समाई होती हैं।
परमात्म प्यार अनावश्यक इच्छाओं, कामनाओं से रहित होता है।
देहधारियों के प्यार से कर्मेन्द्रियां वशीभूत हो जाती हैं।
परमात्म प्यार कर्मेन्द्रियजीत, स्वराज्य अधिकारी बनाता है।
देहधारियों के प्यार से अभिमान, अहंकार जागृत होता है।
परमात्म प्यार स्वमान में रहना, सम्मान से जीना सिखाता है।
देहधारियों का प्यार विनाशी है, अल्पकाल का है।
परमात्म प्यार अविनाशी है, सदाकाल का है।
देहधारियों का प्यार हद की जिम्मेवारियों में फंसाता है।
परमात्म प्यार बेहद विश्वकल्याणकारी की भावना जागृत करता है।
देहधारियों का प्यार में परिवार, दोस्तों, अपनों से दूर कर देता है।
परमात्म प्यार में वसुधैव कुटुम्बकम की भावना भरी होती है।
देहधारियों का प्यार कभी भी तृप्त नहीं कर पाता है।
परमात्म प्यार से जीवन सन्तुष्टता से परिपूर्ण आनंदमयी बन जाता है।
देहधारियों का प्यार कई प्राप्तियों से वंचित कर देता है।
परमात्म प्यार अलौकिक खजानों की प्राप्तियों से संपन्न कर देता है।
देहधारियों के सम्बन्धों से, व्यवहार से कड़वाहट पैदा होती है।
परमात्म प्यार जीवन को सदैव के लिए मधुरता से संपन्न बना देता है।
देहधारियों के प्यार में फंसकर विकर्मों का बोझा बढ़ता जाता है।
परमात्म प्यार से विकर्म विनाश होते हैं, भविष्य जमा होता है।
देहधारियों के प्यार में कोई भरोसा नहीं होता है, धोखे वाला होता है।
परमात्म प्यार में पूरा भरोसा होता है, धोखे से बचाने वाला होता है।
देहधारियों के प्यार से जीवन बर्बाद हो जाता है।
परमात्म प्यार से जीवन आबाद हो जाता है, मालामाल हो जाता है।
देहधारियों का प्यार नारकीय जीवन बना देता है।
परमात्म प्यार स्वर्ग का मालिक, तीनों लोकों का मालिक बना देता है.....।